शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ६ : नई दिल्ली : १३-१९ मई २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद बालोतरा विराज रहे हैं। बालोतरा में निर्धारित प्रायः सभी बड़े कार्यक्रम सानंद संपन्न हो चुके हैं। २२ मई को यहां से विहार कर आचार्यप्रवर अनेक क्षेत्रों का स्पर्श करेंगे। समदड़ी और पारलू में दीक्षा महोत्सव का आयोजन है।

rrh; inkfHk"kd fnol d volj ij ije J); vkpk;ioj dk exy mnckèku

''आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते। श्रमण ज्ञातपुत्र भगवान महावीर लोकोत्तम हैं। एक ऐसी परम पुनीत आत्मा, जिसने तप तपा, साधना की और परमता को प्राप्त किया। वैशाख शुक्ला दशमी का दिन, जिस दिन भगवान महावीर की आत्मा ने केवलज्ञान को उजागर किया था और एक प्रकार से उनकी साधना की एक निष्पत्ति उन्हें प्राप्त हो गई थी। मोहकर्म का संपूर्ण क्षय कर वे कैवल्य के महासूर्य से आलोकित हो गए थे। दुनिया में अनेक महापुरुष हुए हैं। मेरा ज्ञान असीम नहीं है, लेकिन कह सकता हूं, दुनिया के उत्कृष्ट कोटि के जितने महापुरुष हुए हैं, उनमें एक नाम महावीर का रखा जा सकता है। आज कैवल्य कल्याणक के अवसर पर परमप्रभु, हृदय सम्राट परमाराध्य भगवान महावीर के प्रति अपनी अनंत-अनंत आस्था समर्पित करता हूं।

वैशाख शुक्ला दशमी का दिन मेरे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। ठीक सोचता हूं तो वैशाख शुक्ला नवमी (जन्मदिवस) की अपेक्षा और वैसाख शुक्ला चतुर्दशी (दीक्षा दिवस) की अपेक्षा मेरे लिए वैसाख शुक्ला दशमी का दिन अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें मेरा वैशिष्ट्य है। जन्मदिवस का मैं कोई वैशिष्ट्य नहीं मानता। दुनिया के साथ मैं भी हूं, उससे हटकर या उससे अलग नहीं। दीक्षा दिवस को भी मैं अति विशिष्ट नहीं मानता। साधु-साध्वी समुदाय की दृष्टि से वैशाख शुक्ला चतुर्दशी का भी वैशिष्ट्य नहीं है। जैसे साधु-साध्वियों ने दीक्षा ली है, वैसे मैंने भी ली है। किन्तु वैशाख शुक्ला दशमी का वैशिष्ट्य है, क्योंकि संपूर्ण धर्मसंघ में वह केवल मैं एक ही हूं। पूरे धर्मसंघ में इस तुलना में तो मेरे समान कोई नहीं है। मैं एक हूं, विशेष हूं, सबसे हटकर हूं इसलिए मैं वैशाख शुक्ला दशमी को मनाना उचित मानता हूं। इस दिन को मनाया जाए, इसमें मुझे कोई आपत्ति की बात नहीं लगती।

वैसे देखा जाए तो वैशाख शुक्ला दशमी मेरे लिए दायित्व के औपचारिक रूप में स्वीकरण का दिन है। यों तो भाद्रव शुक्ला द्वादशी का दिन भी मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उस दिन परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने अपने हाथों से मुझे दायित्व की चद्दर ओढ़ाई थी। मूल तो दायित्व गुरुदेव ने सौंपा था। यह दायित्व मुझे संघ ने नहीं सौंपा, वास्तव में गुरुदेव ने मुझे दायित्व सौंपा था। उन्होंने जो दायित्व मुझे सौंपा, उसके बाद का क्रियाकलाप उनके महाप्रयाण के बाद धर्मसंघ ने किया। गुरुदेव का फरमाया हुआ निर्णीत जो कार्य था, उसकी औपचारिक संपन्नता धर्मसंघ ने की थी। मैं और आगे जाऊं तो मेरे लिए दीपावली का दिन भी महत्त्वपूर्ण है। उस दिन आचार्य महाप्रज्ञजी ने गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में मेरे लिए उत्तराधिकार पत्र लिखा, इसलिए वह दिन भी मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है। उन सारे दिनों को मैं आज के दिन में अंतर्गर्भित मान लेता हूं तो वैसाख शुक्ला दशमी का दिन मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

मैं सोचता हूं कि दो-दो गुरुओं का साया मिलना मेरे लिए महत्त्वपूर्ण बात है। दो-दो गुरु भी युगप्रधान गुरु। ऐसा नहीं कि एक युगप्रधान और दूसरा सामान्य, दोनों ही गुरु युगप्रधान पद पर प्रतिष्ठित। उनका साया मुझे मिला और साया भी तब मिला, जब वे जीवन का काफी समय पार कर चुके थे, यानी अनुभवी बन चुके थे, पचास पार कर चुके थे।

मेरे जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण बात है कि परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के चरणों में बैठने औरे सोने का भी अवसर मुझे प्राप्त हुआ। गुरुदेव तुलसी ने मुझे कितनी वत्सलता प्रदान की, कितना विश्वास प्रदान किया। मेरी बात पर वे कितना ध्यान देते थे कि ऐसा मुदित ने कहा है, महाश्रमण ने कहा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की मैंने बहुत कृपा और बहुत विश्वास प्राप्त किया और मेरे निर्माण में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साये में और उनके साथ कार्य करने का मुझे मौका मिला। किस प्रकार धीरे-धीरे उनकी अंतरंगता मुझे प्राप्त होती गई और अगर मेरा आकलन ठीक है तो कह सकता हूं, गुरुदेव महाप्रज्ञजी के सामने महाश्रमण से बढ़कर और कोई नहीं था। महाश्रमण से बढ़कर मेरा कोई दूसरा नहीं, ऐसा उनका चिंतन था, यह मेरा अनुमान है। किस प्रकार मैं उनके चरणों में बैठा रहता, आचार्यश्री और मेरे बीच कितनी-कितनी बातें होती। संघ की व्यवस्था से संबंधित कितनी ही बातें गुरुदेव के साथ करने का मुझे मौका मिला। विविध पथदर्शन गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने मुझे प्रदान किया।

मैं एक विशिष्ट बात यह बता दूं कि तेरापंथ के ग्यारह आचार्यों में आज तक कोई ऐसा आचार्य नहीं हुआ, जो अपने दीक्षा प्रदाता के सामने आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुआ हो। मैं ऐसा एकमात्र व्यक्ति हूं जो अपने दीक्षा प्रदाता की विद्यमानता में आचार्य पद पर आसीन रहा हो। इसे मैं अपना सौभाग्य ही मानूंगा कि श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री जो मेरे दीक्षा प्रदाता हैं, उनकी विद्यमानता में मुझे संघ का नेतृत्व करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। मैं चाहूंगा कि मुझे यह अवसर लंबे काल तक प्राप्त होता रहे।

तेरापंथ शासन अपने आप में विशिष्ट है। आज के दिन धर्मसंघ ने मुझे चद्दर ओढ़ाई थी, परमपूज्य महामना आचार्य भिक्षु के पट्ट पर और परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के पट्ट पर मुझे बिठाया था। इसलिए मेरे लिए ही नहीं, पूरे शासन के लिए भी आज का दिन महत्त्वपूर्ण है। आज के दिन एक नव्य रूप में ग्यारहवां अनुशास्ता धर्मसंघ को प्राप्त हुआ था। मैं अपने संघ का शास्ता भी हूं और आचार्य भी, लेकिन मैं स्वयं को शासन का सेवक मानता हूं। जैसे आप लोग कहते हैं कि आचार्यश्री! हम तो आपके चरणों के चाकर हैं, दास हैं, आदि-आदि। वैसे ही भक्तिभावना के संदर्भ में मैं भी कहना चाहूंगा कि मैं तो शासन देवता के चरणों का चाकर हूं। अध्यात्म की बात को एक बार अलग छोड़ दें, व्यवहार की भूमिका पर सोचता हूं तो मेरे लिए तेरापंथ शासन सर्वोपरि है। तेरापंथ शासन से बढ़कर मेरे लिए कोई नहीं, कुछ भी नहीं। शासन मेरा है, मैं शासन का हूं और शासन की सेवा जितनी मैं कर सकूं, मुझे करनी चाहिए। छोटा-मोटा कष्ट उठाकर भी मुझे शासन की सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए। भले आधी रात को मुझे उठना पड़े, भले दिन के विश्राम को छोड़ना पड़े, शासन की सेवा का अवसर मिल रहा है तो वहां मुझे कभी नींद में भी कटौती करनी पड़े तो कोई झिझक नहीं होनी चाहिए। तकलीफ पड़े तो पड़े, मेरे लिए शासन पहले है। मेरे सामने और भी अनेक गतिविधियां हैं, पर मैं सबसे ज्यादा महत्त्व तेरापंथ शासन, भैक्षव शासन को देता हूं, देता रहूंगा। इस शासन की सेवा और सुरक्षा का सबको प्रयास करना है। शासन का यथोचित विकास करने का प्रयास करना मेरा ही नहीं, आप सबका परम पुनीत कर्तव्य है।

हमारा धर्मसंघ आत्मनिष्ठा में प्रवर्द्धमान रहे। हम आत्मा के प्रति, अध्यात्म के प्रति निष्ठा रखें। हमारी आत्मनिष्ठा बढ़े और संघनिष्ठा हमारी मजबूत रहे। छोटी-मोटी तुच्छ बातों के लिए कभी हमारे मन में विचलन, फिसलन का भाव न आ जाए। हम अपने धर्मशासन में जियेंगे और सौ वर्षों के बाद शासन में ही कभी

संथारा करके समाधिमरण को प्राप्त करेंगे, यह भावना होनी चाहिए। शासन से बाहर पैर रखने की बात हमारे सपने में भी न आए। संघ की सेवा के लिए हम तत्पर बने रहें। जहां संघ को अपेक्षा है, शासन को जहां हमारी सेवा की अपेक्षा है, हम वहां जाने के लिए, वहां पहुंचने के लिए सदा तत्पर बने रहें। हमारी आज्ञानिष्ठा पुष्ट रहे। शासनपति की आज्ञा तो बड़ी बात, उनका इंगित, इशारा या संकेत भर मिल जाए तो उसके प्रति भी बहुत जागरूक रहें। उसे सबसे ज्यादा महत्त्व दें कि शासनपति का यह इंगित हमें मिला है, तो इसे प्राथमिकता देना हमारा पहला कर्तव्य है। शासनपति के इंगित के प्रति हमारे मन में सदा बहुमान और सम्मान की भावना रहे। हमारी आचारनिष्ठा पुष्ट रहे। हम अपने निर्धारित उपयुक्त आचार के प्रति और कषायमंदीकरण की साधना के प्रति जागरूक व समर्पित रहें। पांचवीं बात है मर्यादा निष्ठा। जो शासन की, संघ की मर्यादाएं हैं, हम उनके प्रति जागरूक रहें। उनकी अवहेलना का पाप हम न करें। मर्यादाओं के प्रति उचित सम्मान का भाव मन में हमेशा बनाए रखें। हम शासन में साधना के लिए सम्मिलित हुए हैं तो साधना के विकास के प्रति हमें जागरूक रहना चाहिए। यदि लक्ष्य स्पष्ट होता है तो व्यक्ति अपने लक्ष्य की दिशा में आगे भी बढ़ सकता है।

मैंने दो वर्ष आज संपन्न किए हैं। विधिवत पदासीन होने से लेकर आज तक मैंने अनुभव किया कि मैं भाग्यशाली तो हूं। यह तो मुझे विश्वास है कि मैं काफी अंशों में भाग्यशाली हूं, जिसे तेरापंथ शासन जैसा संघ प्राप्त हुआ। ऐसे शासन का नेतृत्व करने का अवसर बिना भाग्य के नहीं मिल सकता। अगर ज्योतिष की दृष्टि से कहूं तो प्रबल कोई राजयोग, कोई प्रबल पुण्यवत्ता हो तो किसी व्यक्ति को आज के युग में तेरापंथ जैसे शासन की गद्दी पर बैठने का मौका मिल सकता है, वरना ऐसी गद्दी का मिलना कोई आसान बात नहीं है। आज की स्थिति में यह ताज उसे ही पहनने को मिलता है जिसकी प्रबल पुण्ययी का उदय हो, जिसने पूर्वजन्म में कोई प्रचंड साधना और तपस्या की हो।

यों तो मैं पहले भी व्यवस्था कार्य देखता था, किन्तु दो वर्षों से प्रत्यक्ष दायित्व निभा रहा हूं। मैंने देखा कि साधुओं में मेरे प्रति कितना सम्मान का भाव है, विनय का भाव है। रत्नाधिक संतों के प्रति मेरे मन में भी बहुत सम्मान का भाव है। यह भी मेरा भाग्य है कि इतने रत्नाधिक संत मुझे प्राप्त हैं। छोटे संतों को और बाल मुनियों को देखता हूं, तो उनमें कितना विनय और सम्मान का भाव है। साध्वियों में भी जो विनय और सम्मान का भाव है, वह अपने आप में उल्लेखनीय है। हालांकि उसमें और वृद्धि होनी चाहिए। पर्याप्त की बात मैं नहीं कह रहा हूं। साधु-साध्वियों में शासन के प्रति समर्पण और सेवा की भावना और ज्यादा पुष्ट होती रहे, यह मेरी कामना है।

सेवा और समर्पण में हमारा श्रावक समाज भी कम नहीं है। मैं तो कई बार सोचता हूं और कहता भी हूं कि हमारा श्रावक-श्राविका समाज ऐसा है, जिस पर हमें गौरव की अनुभूति होती है। श्रावक समाज में कितना विनय, कितनी सेवा की भावना, कितनी इंगित के प्रति जागरूकता है। आचार्य का इंगित ही मानों उनके लिए सब कुछ है। मैंने देखा और अनुभव किया है कि श्रावक समाज में संघ और संघपति के प्रति श्रद्धा-समर्पण और सम्मान का भाव है।

तेरापंथ शासन की अपनी मर्यादाएं हैं, अपनी व्यवस्थाएं हैं। मुझे तो लंबे काल तक परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साथ उनके युवाचार्य के रूप में साथ रहने का मौका मिला। लंबे काल तक युवाचार्य के रूप में रहने का मौका मिल जाता है तो वह प्रशिक्षण का और अनुभव को बढ़ाने का अच्छा समय होता है। परन्तु यह सबको कहां मिलता है? परमपूज्य गुरुदेव तुलसी को पूज्य कालूगणी के पास युवाचार्य के रूप में रहने का लंबा काल नहीं मिला। डालगणी को तो युवाचार्य के रूप में एक मिनट का भी समय नहीं मिला और पूज्य कालूगणी को भी घोषित युवाचार्य के रूप में रहने का मौका नहीं मिला। पूज्य माणकगणी को अल्प-सा काल मिला। किसी-किसी आचार्य को ही लंबे काल तक अपने गुरु के पास युवाचार्य के रूप में

रहने का मौका मिलता है। उनमें एक नाम मेरा लिया जा सकता है। मुझे लंबे काल तक युवाचार्य के रूप में रहने का मौका मिला और मेरा तो विशेष रूप में नाम लिखा जा सकता है, जिनको अपने आचार्य से पूर्ववर्ती गुरु के पास भी अप्रत्यक्ष रूप से निर्णीत युवाचार्य के रूप में रहने का मौका मिला, क्योंकि मैं तो गुरुदेव तुलसी की विद्यमानता में ही लिखित रूप में संघ का युवाचार्य तो बन ही गया था। इस प्रकार मुझे दो गुरुओं के पास रहने का दुर्लभ अवसर मिला।

हमारा धर्मसंघ एक आचार्य के नेतृत्व में चलने वाला धर्मसंघ है। यह हमारे संघ की मुख्य विशेषता है और भी कहीं यह व्यवस्था हो सकती है, लेकिन यहां मैं अपने संघ की व्यवस्था के बारे में कह रहा हूं कि यहां एक आचार्य के रूप में जुड़ा व्यवस्था तंत्र है। किस साधु या साध्वी को कहां जाना है, किसके साथ चतुर्मास करना है, यह निर्णय मुख्यतः और मूलतः आचार्य के हाथ में है। सभी साधु-साध्वियां आचार्य की निश्रा में हैं और मैं तो यह मानता हूं कि श्रावक-श्राविकाएं भी आध्यात्म की दृष्टि से मेरी निश्रा में हैं, समणश्रेणी भी मेरी निश्रा में है। समण-समणियां आचार्य के निर्देश के अनुसार चलने वाले हैं। समणश्रेणी का भी विनयभाव उल्लेखनीय है। समणियां उपासना में बैठी रहती हैं। समय हुआ और आकर बैठ जाती हैं, आगम स्वाध्याय करती हैं। कभी कोई क्लास आदि भी लग जाती है, कभी कुछ बता भी देता हूं, अन्यथा ये मौन भाव से उपासीन रहती हैं। इस प्रकार हमारी समणश्रेणी भी आत्मकल्याण करती हुई संघ सेवा में संलग्न है। संघ की प्रभावना में इस श्रेणी का भी योगदान है। समणियां कहीं भी रहें, उनका आध्यात्मिक तार हमसे जुड़ा रहता है। देश में रहें या विदेश में, तार हमसे जुड़ा रहता है। बहुत विनीत, समर्पित और बड़ा कुशल समाज है। इनको प्रेक्षाध्यान के लिए भेज दो, जीवनविज्ञान के लिए भेज दो, श्रावक समाज के बीच व्याख्यान के लिए अथवा विद्वद्गोष्ठियों और सभा-सेमिनारों में भेज दो, कहीं भी जाने के लिए तैयार रहती हैं। इस श्रेणी का भी आध्यात्मिक नेतृत्व करने का अवसर मुझे प्राप्त है।

अमृत महोत्सव का यह चतुर्थ चरण संपन्न हो रहा है। चतुर्थ चरण का सप्तदिवसीय कार्यक्रम चला और अब संपन्नता की ओर है। साध्वीप्रमुखाजी के निवेदन पर पांचवां चरण और मैंने लाडनूं के लिए स्वीकार कर लिया है। वैसे हमारा एक वर्ष का समय तो अब संपन्न हो रहा है। एक वर्ष में अच्छा कार्यक्रम चला है। साध्वीप्रमुखाजी का निर्देशन रहा ही, साथ में मुनि कुमारश्रमणजी का श्रम रहा। बड़ी सूझबूझ से अच्छा काम किया है। मैंने इन्हें अमृत महोत्सव का प्रवक्ता बनाया था। इस आयोजन की सफलता में योग तो बहुत से लोगों को रहा, किन्तु प्रेरणा और सक्रियता से काम करने का दायित्व मुनि कुमारश्रमणजी के जिम्मे था। इसलिए इनको साधुवाद देना चाहूंगा कि इन्हें जो काम सौंपा था, इन्होंने उसे बखूबी पूरा करने का प्रयास किया है। इस काम में अपना अच्छा दिमाग लगाया है, अच्छी प्लानिंग की है। केवल प्लानिंग ही नहीं हुई, उसकी क्रियान्विति भी हुई है। इन्होंने सवा सौ प्रतिशत सफलता की बात कही है। मुनि कुमारश्रमणजी साधुवाद के पात्र हैं। वैसे तो साध्वीप्रमुखाजी का निर्देशन था, किन्तु योजना निर्माण और क्रियान्विति में इनका भी योगदान है। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का चिंतन-मंथन और निर्देशन तो है ही, किन्तु लोगों से संपर्क करने और खुले रूप में काम करने में मुनि कुमारश्रमण का अच्छा योगदान रहा है।

शासन की व्यवस्था में हमें साध्वीप्रमुखाजी का बड़ा योगदान मिलता है। साध्वीप्रमुखा के बिना इतने बड़े साध्वी समाज को संभालना कठिन काम है। प्रत्यक्ष में हमारा साध्वियों से इतना संपर्क नहीं रहता है और पूरी स्थिति ज्ञात न हो तो किसी के लिए कोई निर्णय कर देना मेरी दृष्टि में अन्याय की बात है। उस अन्याय से बचने के लिए भी साध्वीप्रमुखा का होना बड़ा आवश्यक है। मुझे इस शासन का संचालन करने में और खास कर साध्वियों की व्यवस्था का संचालन करने में साध्वीप्रमुखाजी का सुयोग प्राप्त है। कितनी साध्वियां गुरुकुलवास में, कितनी बहिर्विहार में और किस साध्वी की क्या अपेक्षा है, कैसे पता चले? संवाद तो यदा-कदा मेरे पास आते रहते हैं और मैं सोचता हूं बहुत कुछ विषयों में साध्वीप्रमुखाजी की राय

लिए बिना मुझे निर्णय नहीं देना चाहिए। इसी तरह समणियों के बारे में मुख्यनियोजिकाजी का सहयोग मिलता है।

पूर्व में एक मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी हुए गुरुदेव तुलसी के जमाने में, उसके बाद मेरे युग में मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) मंत्री मुनिश्री के रूप में प्रतिष्ठित हैं। मंत्री मुनिश्री का भी हमारे धर्मसंघ में महत्त्वपूर्ण स्थान है। कह सकता हूं आज की स्थिति में मेरे बाद साधुओं में सम्मान की दृष्टि से मंत्री मुनिश्री का प्रथम स्थान है।

जहां तक बक्शीश की बात है, मैंने देखा गत सात दिनों में साधु-साध्वियों, समणियों आदि ने जो अपनी विभिन्न प्रस्तुतियां दीं, गीत, कविता, भाषण आदि के माध्यम से, मुझे लगा कि विकास हो रहा है। गीत सुन्दर बनाते हैं और सुन्दर गाते हैं। इन सात दिनों में विकास के कुछ अच्छे उपक्रम सामने आये हैं। उसके लिए मैं अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं और आगे भी उचित विकास की कामना करता हूं। अब रही बक्शीश की बात, उसके बारे में कहूं तो बक्शीश में मेरी रुचि कम रहती है, लेकिन व्यवहार को मैं बिल्कुल लांघता नहीं हूं। व्यवहार की परंपरा जो चली आ रही है, उसे यथावत रखना चाहूंगा। पट्टोत्सव के इस प्रसंग पर पूरे धर्मसंघ के साधु-साध्वियों को तीन महीनों के लिए औषधि व मांगी गई वस्तु के लिए जो विगयवर्जन होता है तीन महीनों तक सभी साधु-साध्वियों को उस विगयवर्जन की मुक्ति बक्शीश करता हूं। इसके साथ में दूसरी एक और बक्शीश करना चाहूंगा, कोई नियम के रूप में नहीं, प्रेरणा के रूप में कि आगामी वैशाख शुक्ला नवमी या दशमी तक मान लें, प्रतिदिन पन्द्रह-पन्द्रह मिनट तक आगम स्वाध्याय करना है। भले इसे चितारना कहें या स्वाध्याय कहें, कोई नियम के रूप में नहीं, स्वास्थ्य और समय की अनुकूलता हो तो पन्द्रह-पन्द्रह मिनट प्रतिदिन आगम स्वाध्याय में लगाने का प्रयास करना है।

हमारे बालमुनि शुभंकर को देखें। सरदारशहर में दशमी के बाद सबसे पहले शुभू मेरे द्वारा दीक्षित हुआ था। हमारे मृदु मुनि भी बालमुनि है, मुनि गौरव है। दोनों अच्छा काम करते हैं। मुनि हेमन्त है और भी कई हैं। कई संत तो मेरे पास काफी बैठे रहते हैं। मैं इन्हें काम में भी लेता रहता हूं। गौतम तो सेवाभावी मुनि बन गया है। खासकर हमारी सेवा में तत्पर रहता है। इधर महावीर, मनन और भी कई साधु हैं जो मेरे निकट बैठते हैं और भी हमारे संत हैं, जो भले ही निकट न बैठें, लेकिन हमारा ही काम करते हैं।

हमारा धर्मसंघ खूब प्रवर्द्धमान रहे, हम खूब अच्छा काम करते रहें, शासन की सेवा करते रहें और शासन के माध्यम से दूसरों की भी यथासंभव यथोचित सेवा करते रहें, यह कामना है।'

ver egksRlo&prFk pj.k % e[; lekjkg

३० अप्रेल, वैशाख शुक्ला नवमी, अमृत महोत्सव के चतुर्थ चरण का मुख्य समारोह, आचार्य तुलसी उच्च माध्यमिक विद्यालय व जीतमल हरीशकुमार प्राथमिक विद्यालय का प्रांगण। परमाराध्य आचार्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ। समणीवृन्द द्वारा मंगल गीत की प्रस्तुति के बाद प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री देवराज खींवसरा ने स्वागत भाषण किया। जैन विश्वभारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, महासभा के मुख्य न्यासी श्री कमल दूगड़, अमृत महोत्सव के संयोजक श्री ख्यालीलाल तातेड़ ने पूज्यवर की अभिवंदना में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। मुनि रजनीशकुमारजी, साध्वी सुमतिप्रभाजी ने अपनी विनयांजलि समर्पित की। साध्वी चारित्रयशाजी ने अंग्रेजी भाषा में अपने भावों को सुन्दर प्रस्तुति दी। स्थानीय श्रावक श्री बाबूलाल ढेलड़िया देवता ने अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में छह दिन के तप में इक्कीस की तपस्या का प्रत्याख्यान कर त्यागमय श्रद्धार्पण किया। मुनिवृन्द और साध्वीवृन्द के सुमधुर गीत हुए। हरियाणा प्रान्तीय तेरापंथी सभा की ओर से अध्यक्ष श्री घीसाराम जैन, मुख्य संरक्षक श्री रघुवीरचन्द जैन, महामंत्री श्री प्रमोद जैन, उपाध्यक्ष व स्मारिका संयोजक श्री सुरेन्द्र

जैन एडवोकेट, श्री नंदकुमार जैन ने अमृत महोत्सव के अवसर पर हरियाणवी संस्कृति का प्रतीक नवडांडी का बीजना भेंट किया। इसी के साथ 'निर्गुण चदरिया' स्मारिका व चंदन काष्ठ में फ्रेमिंग किया हुआ पूज्य आचार्यवर का नयनाभिराम चित्र श्रीचरणों में उपहृत किया। राजस्थान के लोक कलाकारों ने लोक गीतों के माध्यम से अभिवंदना की। युवाकांग्रेस के श्री वीरेन्द्र वशिष्ठ ने कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी के प्राप्त सन्देश का वाचन किया। साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं) ने धागों से निर्मित विजयहार उपहृत किया। इन धागों से स्वस्तिक, पंचाचार व अमृत महोत्सव प्रतीक को कलात्मक प्रस्तुति दी गई है। मंत्री मुनिश्री ने जब इसे आचार्यवर को गले में पहनाया तो उपस्थित विशाल श्रोता वर्ग ने 'ओम् अर्हम' की तुमुल ध्वनि की। कपड़े से बना आरती थाल और उसमें रखे हस्तनिर्मित आकर्षक श्रीफल को भी श्रीचरणों में उपहृत किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री सुदीप बंदोपाध्याय ने कहा--'अमृत महोत्सव का रिपोर्ट कार्ड देखा तो लगा कि इतना काम तो सरकार भी नहीं करती। पचास लाख लोगों का नशामुक्त होना बहुत बड़ी उपलब्धि है। मैं इस बात को भी महत्त्वपूर्ण मानता हूं कि आचार्यश्री के पास हर वर्ग और हर जाति के लोग आते हैं और आप उन्हें प्यार व सम्मान के साथ आशीर्वाद देते हैं। मेरी कामना है कि आप लंबे समय तक देश हित में अपना मंगल आशीष और हम सबको अपना पथदर्शन देते रहें।'

अमृत महोत्सव के प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। पंचाचार की समग्र रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया--अमृत महोत्सव के संदर्भ में पंचाचार की जो योजना निर्धारित हुई थी, वह शत-प्रतिशत तो क्रियान्वित तो हुई ही, कुछ योजनाएं तो सवा सौ प्रतिशत से अधिक सफल हुईं। इसमें साधु-साध्वियों और समणीवर्ग के साथ विभिन्न संस्थाओं एवं व्यक्तियों का भी पूरा योगदान रहा।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्यप्रवर जीवन के छठे दशक में प्रवेश कर रहे हैं। मैं आपका सर्वांगीण व्यक्तित्व के रूप में अभिनंदन करती हूं। सर्वांगीण व्यक्तित्व वह होता है, जो भक्ति, ज्ञान व क्रिया से समन्वित होता है। आचार्यवर की भक्ति प्रखर व विलक्षण है। आपका ज्ञान विशिष्ट है व अनेक भाषाओं और विषयों के आप ज्ञाता हैं। आपकी क्रिया निष्ठा भी बेजोड़ है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अमृत महोत्सव के कार्यक्रमों का दस्तावेज पूज्य आचार्यवर को उपहृत किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'वह शासक सफल माना जाता है, जिसके राज्य के अधिकारी अपनी प्रजा के लिए समर्पण रखते हैं। वह गुरु भी सफल होता है, जिसका शिष्यवर्ग समर्पित है और तप-त्याग से अनुप्राणित है। आचार्यवर के प्रति संघ के सदस्यों में गहरी निष्ठा, समर्पण व एकात्मकता का भाव है। विगत पचास वर्ष आचार्यवर के विभिन्न रूपों के विकास एवं विस्तार की महागाथा है। अगली आधी सदी संघ को शिखर पर ले जाने वाली बने। आप दीर्घायु तो हैं ही, निरामय भी बनें और संघ व संपूर्ण मानव जाति को पथदर्शन देते रहें।'

अमृतपुरुष आचार्यवर ने अपने प्रेरक व प्रभावी प्रवचन में अपनी पचास वर्षीय जीवनयात्रा का सिलसिलेवार विवेचन किया और अमृत वर्ष की एक वर्ष की अवधि में पंचाचार की निष्पत्तियों की सराहना की। आचार्यवर का वह उद्‌बोधन पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुका है।

inkfHk"kd fnol dk HkO; vk;kstu

१ मई, वैशाख शुक्ला दशमी। आचार्यश्री महाश्रमण पदाभिषेक दिवस का आयोजन। अमृत समवसरण

में पूज्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ। मुमुक्षु बहनों के मंगल संगान के बाद शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि अनंतकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी, मुनि शुभंकरकुमारजी, साध्वी रतिप्रभाजी एवं समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी ने अपने भावों को प्रस्तुति दी। प्रेक्षाध्यान मासिक पत्रिका का नवीन अंक भेंट करते हुए समणी सत्यप्रज्ञाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। श्रीमती प्रेमलता बागरेचा (अहमदाबाद) ने पंचाचार पर आधारित हस्तनिर्मित कलात्मक पांच फोटो फ्रेम पूज्यचरणों में उपहृत किए। साध्वीवृन्द, समणीवृन्द एवं सिवांची-मालानी के मुनियों के सुमधुर गीत हुए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से पूज्य चरणों में अभिनंदन पत्र समर्पित किया, जिसका वाचन मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'पूरे धर्मसंघ में उल्लास है, उमंग है कि हम अमृत महोत्सव व पदाभिषेक दिवस मना रहे हैं। आचार्यप्रवर की विनम्रता बेजोड़ है। आप संघ का कुशल नेतृत्व कर रहे हैं। आपकी कुशल अनुशासना में संघ विकास के नित नये कीर्तिमान गढ़ता रहे। यह मंगल प्रसंग सबके लिए कल्याणकारी व मंगलकारी बने।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के निर्देशन में पूरे वर्ष अमृत महोत्सव का सुव्यवस्थित कार्यक्रम चला। साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में वैशाख मास के माहात्म्य को रेखांकित करते हुए कहा--'भारतीय दर्शन में वैशाख माह त्रेता युग के प्रारंभ का साक्षी है। सुप्तावस्था की स्थिति कलियुग है, जागरण त्रेता है और सतयुग चलने की प्रेरणा देता है। हमारे धर्मसंघ में कुछ विशिष्ट दिन भी इस माह से जुड़े हुए हैं। अक्षयतृतीया के साथ आचार्यवर का जन्मदिन, पट्टोत्सव व दीक्षा दिवस के कार्यक्रम बालोतरा को मिले, यह बालोतरावासियों का सौभाग्य है।'

महाश्रमणीजी ने आगे कहा--'आचार्यवर ने बक्शीश के रूप में हमें अमृत महोत्सव प्रदान किया। पंचाचार के आधार पर अमृत महोत्सव की आयोजना हुई। जिस उत्साह से अमृत महोत्सव का कार्य शुरू हुआ, वह पूरे वर्ष तक बना रहा। धर्मसंघ ने प्रवर्धमान भावों के साथ हर कार्य को संपादित किया। इससे पूरे धर्मसंघ में जागरूकता आई है। हमारा श्रावक समाज इतना विनीत है कि गुरु निर्देश को शिरोधार्य कर हर कार्य को आगे बढ़ाता है। मुनि कुमारश्रमणजी ने अपनी सूझबूझ व जागरूकता के साथ अमृत महोत्सव के वर्ष भर के कार्यक्रमों की आयोजना की। उन्होंने अच्छा श्रम किया और अभी जो आंकड़े प्रस्तुत किए गए, उसे देखकर कहा जा सकता है कि आयोजना परिणाममुखी रही। एक व्यक्ति को केन्द्र में रखकर सैकड़ों गीतों, कविताओं और निबन्धों की विभिन्न विधाओं में रचना हुई है।'

आचार्यवर की वंदनीयता की चार आधारभूत बातों पर प्रकाश डालते हुए साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'प्रथम बात--आपके मुखारविन्द पर सहज मुस्कान है। प्रसन्नता सफलता का सबसे बड़ा राज है। यह ऐसा तत्त्व है जो सबको अपना बना लेता है। दूसरी बात--आपके अन्तःकरण में अनुकंपा का भाव है। आपके प्रवचन व बातचीत के समय आपके श्रीमुख से अमृत प्रवाहित होता है। चौथी बात यह कि आचार्यवर का अपना कुछ नहीं, वे परोपकार के लिए समर्पित हैं। आप मानव जाति का हित चिंतन करते हैं। यह समष्टि के कल्याण की वृत्ति विशिष्ट पुरुषों में ही होती है। आपका पुण्य प्रताप प्रभावशाली है। ऐसे महान व्यक्तित्व का नेतृत्व पाकर हम सब धन्य हैं। आप जो संकेत या इंगित प्रदान करें, उसे क्रियान्वित करने के लिए हम सब संकल्पित हैं।' महाश्रमणीजी ने इस अवसर पर अपनी एक भावपूर्ण कविता भी प्रस्तुत की, जो इस प्रकार है--

bl ;x d re egkohj gk] re jghe re gh gk jkeA
d".k c) xkèkh re gh gk] re gh lcd itkèkke Ï

'kkUr lIjkoj Fkk thou dk] mle mBk vpkud TokjA
Je.k cu ;k Je.kkikId] >dr gvk ân; dk rkjA
[kkyk okrk;u fopkj dk] fey uk ikb 'khr c;kjA
}U} nj dju ekuI dk] tkMk Jh dky I rkjA
i'ukdy fpUruèkkjk ij] yxk mIh iy i.kfojke Ï

fI)Jh vfHkuo ;k=kk dh] fuèkkfjr Fkk y{; egkuA
ixfr f"k[kj ij vkjkg.k dk] Lolu cuk Je I QyokuA
efty [kMh Lo; Lokxr e] pj.k jg ifriy xfrekuA
gk vkReLFk cukb reu] viuh ,d vyx igpkuA
ik#"k d ifreku! HkkX; I] [ky db vnHkr vk;ke Ï

egkiK d Ig;kxh re] ver egkRIo dk migkjA
viuk fgr Icdk fgr Ikèkk] jpk Lo; uru IIkjA
egkJe.k dk in xfjeke;] ub 'kfDr dk vfHkIpkjA
{kerk, rc Igt mtkxj] Hkjk gvk Hkhrj HkMkjA
vrjx ifj"kn I tM fQj] djr jg dk; fu"dke Ï

nk&nk vkpk;k u feydj] fd;k rEgkjk uo&fuek.kA
x.k Ipkyu dyk fI[kkb] i.kr gk jgk Idy tgkuA
vkgr ILdfr d I;kn;! g re ij IkfRod vfHkekuA
u, f{kfrt dk mn?kkVu gk] djk vuBk vuIèkkuA
vk[kk e Nfo cI rEgkjh] vèkjk ij e[kfjr gk uke Ï

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का पदाभिषेक के अवसर पर मार्मिक एवं प्रेरणादायी प्रवचन हुआ जो इसी विज्ञप्ति के प्रारंभ में प्रकाशित है।

Ikèk&Ikfèo;k dk vydj.k&Ickèku

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने इस महनीय प्रसंग पर अनेक साधु-साध्वियों को विशिष्ट संबोधन से संबोधित करते हुए कहा--'मैं आज के अवसर पर कुछ साधु-साध्वियों को सम्मानित करना चाहता हूं। हमारे कुछ वयोवृद्ध साधु-साध्वियां हैं। एक साध्वी सूरजकुमारीजी जो जयपुर की हैं और अभी बीदासर में हैं, बहुत वद्ध साध्वी हैं, स्वर्गीया शासन गौरव साध्वी कमलूजी की बहन हैं। उन्होंने अच्छा काम किया है, मुम्बई आदि क्षेत्रों में विचरण किया है। आज मैं उन्हें **'kkIuJh Ikèoh Ijtdekjhth ¼t;ij½** के रूप में स्वीकार करता हूं।

साध्वी सूरजकुमारीजी (सरदारशहर) जो अभी मुम्बई में हैं, उन्होंने भी शासन की सेवा की है, आज इस अवसर पर उन्हें भी **'kkIuJh Ikèoh Ijtdekjhth ¼Ijnkj'kgj½** के रूप में स्वीकार करता हूं।

साध्वी कानकुमारीजी (सर.) जो दिवंगत हो चुकी हैं, बड़ी अच्छी साध्वी थीं। किसी जमाने में गुरुदेव तुलसी के समय में संघ में निकाय व्यवस्था का काम संभालने वाली साध्वी थीं। मैंने उन्हें विवेकसंपन्न और चिंतनशील साध्वी के रूप में उन्हें देखा था। आज उनको भी मैं दिवंगत हो जाने के बाद **'kkIuJh Ikèoh**

dkudekjh th ¼l j-½ के रूप में स्वीकार करता हूं।

संतों में हमारे एक संत हैं मुनिश्री धर्मचन्दजी स्वामी, जो गंगाशहर के हैं। स्थान-स्थान पर जाकर उन्होंने काम किया है। मैं आज उन्हें 'kklu Jh efu Jh èkepUn th Lokeh के रूप में स्वीकार करता हूं।

एक हमारे पुराने संत हैं श्रीडूंगरगढ़ के मुनिश्री पृथ्वीराजजी स्वामी। मुनि जसकरणजी स्वामी, मुनि मिलापचन्दजी स्वामी के साथ लंबे समय तक रहे हैं। वयोवृद्ध हो गए हैं। उन्हें भी आज मैं 'kklu Jh efu Jh iFohjkt th Lokeh ¼JhMwxjx<½ के रूप में स्वीकार करता हूं।

हमारे एक वयोवृद्ध मुनिश्री नगराजजी स्वामी अभी गंगाशहर में हैं। वर्षों से उन्हें देखता आ रहा हूं। मैंने उनमें निष्ठा का भाव देखा है। वे व्यवहारकुशल भी हैं। आज मैं मुनिश्री नगराजजी स्वामी (सर.) को okRlY;efr efu Jh uxjkt th Lokeh के रूप में स्वीकार करता हूं। ऐसे और भी हमारे अनेक साधु-साध्वियां संघ की सेवा में संलग्न हैं। यदा-कदा यथावसर मैं अपनी ओर से साधु-साध्वियों को सम्मान देकर उनकी विशेषताओं और सेवाओं का अंकन करने का प्रयास करता हूं। आज मैंने तीन साधुओं और तीन साध्वियों को सम्मान दिया है। हमारे सभी साधु-साध्वियां अपना अधिक से अधिक विकास करते रहें, यह हमारी कामना है।''

२५ अप्रेल से १ मई तक आयोजित सप्तदिवसीय अमृत महोत्सव कार्यक्रम का कुशल एवं प्रभावी संचालन अमृत महोत्सव प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने किया। इन सात दिनों में अनेक साधु-साध्वियों, समणियों एवं भाई-बहनों ने वक्तव्य, गीत, कविता आदि के माध्यम से पूज्यप्रवर को वर्धापित किया। प्रायः सभी ने परिश्रमपूर्वक व कल्पना के साथ अपनी शानदार प्रस्तुतियां दीं। व्यवस्था आदि में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा व आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति सक्रिय रही।

„ ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में अनित्य भावना की विवेचना करते हुए शाश्वत आत्मा के कल्याण हेतु सत्पुरुषार्थ की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर से पूर्व मंत्री मुनिश्री का वक्तव्य हुआ। उपासक श्रेणी द्वारा गीत के माध्यम से पूज्यवर की अभिवंदना की गई। श्री रोहित जैन ने भी गीत का संगान किया। आज सायंकाल बाडमेर जिले के एस.पी. श्री राहुल बारहठ पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचे और विविध विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

… ebA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन प्रवचन में उपस्थित जनता को अशरण और अत्राण जगत में धर्म की शरण स्वीकार करने हेतु उत्प्रेरित किया। पूज्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

† ebA परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः वृद्ध, रुग्ण और अक्षम व्यक्तियों को दर्शन देने हेतु बालोतरा के खत्रियों का चौक में स्थित पुराने तेरापंथ भवन में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन होकर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया।

आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यवर ने साधु-साध्वियों की उपस्थिति में 'हाजरी' का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को मर्यादाओं के अनुपालन के प्रति जागरूकता को बनाए रखने और उसे वृद्धिंगत करने की प्रेरणा प्रदान की। बालमुनि मृदुकुमारजी और मुनि शुभंकरजी द्वारा लेखपत्र के उच्चारण के पश्चात् साधुओं ने दीक्षाक्रम से पंक्तिबद्ध और साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी उद्बोधन हुआ।

आज मध्याह्न में बालोतरा उपखंण्ड की २४ ग्राम पंचायतों के ग्रामसेवक आचार्यवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। पांच अंकेक्षकों और पांच इंजीनियरों सहित पहुंचे इन ग्रामसेवकों को आचार्यवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। पूज्यवर से पूर्व मुनि उदितकुमारजी और मुनि जंबूकुमार (मिंजूर) के वक्तव्य हुए। उपखण्ड विकास अधिकारी श्री रंजनकुमार कंसारा ने आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

ijeiT; vkpk;ioj dk ...<ok nh{kk fnol

‡ ebA वैशाख शुक्ला चतुर्दशी का मंगल दिन। परमाराध्य आचार्यप्रवर का ३९वां दीक्षा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संयोगवश हिन्दी माह की तिथि और अंग्रेजी माह की दिनांक भी आज अड़तीस वर्षों पूर्व के इतिहास की पुनरावृत्ति कर रही थी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी, मुनि राजकुमारजी, मुनि धन्यकुमारजी, साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी वंदनाश्रीजी, साध्वी मीमांसाप्रभाजी, साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी केवलयशाजी, साध्वी सुषमाकुमारीजी, साध्वी तरुणयशाजी, साध्वी जिनप्रभाजी एवं श्री हनुमान लूंकड़ ने आराध्य की अभ्यर्थना में अपने भावसुमन अर्पित किए। साध्वीवृन्द ने समूहगीत प्रस्तुत किया। साध्वी कमलश्रीजी आदि साध्वियों ने गीत के द्वारा पूज्यवर को वर्धापित किया। पूज्यवर के सहदीक्षित मुनि उदितकुमारजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में आचार्यवर के संयम को अनुत्तर बताते हुए तेजस्वी संन्यासी के रूप में पूज्यवर की वर्धापना की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यवर के पादाम्बुज में अपनी आस्था का अर्घ्य समर्पित करते हुए पूज्यवर के दीक्षा दिवस पर जनता को संयम के विकास की अभिप्रेरणा प्रदान की।

आचार्यवर के दीक्षा प्रदाता मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'पूज्य गुरुदेव तुलसी की अनुज्ञा से अपने हाथ से रोपित बीज को विशाल कल्पवृक्ष के रूप में लाखों-लाखों को छाया देते हुए देखकर मैं अत्यन्त गौरव की अनुभूति कर रहा हूं। यह हमारा सौभाग्य है कि तीर्थंकर देवतुल्य आचार्य प्राप्त हैं। हम इनकी पवित्र छत्रछाया में अपनी आत्मा का उत्थान करते रहें।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में बाल्यकाल से दीक्षा ग्रहण तक तथा दीक्षा ग्रहण से अग्रिम विकास यात्रा की अवगति प्रदान की। पूज्यवर ने प्रवचन के मध्य पट्ट से उतर कर अपने दीक्षा प्रदाता मंत्री मुनिश्री को वंदना की। मंत्री मुनिश्री ने पूज्यवर के करकमलों को अपने हाथों में लेकर बद्धांजलि सादर अहोभाव अभिव्यक्त किया। उपस्थित जनता इस भावपूर्ण दृश्य को देखकर अभिभूत थी। आचार्यवर ने प्रवचन के मध्य प्रसंगवश कहा--'मुझे युवाचार्य बनाने के बाद परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने मुनि योगेशकुमारजी को मेरे पंचमी पात्र को वहन करने हेतु नियुक्त किया था। इन्होंने जिस दिन दीक्षा ली, उसी दिन मेरे पास आ गए थे। बड़ी जागरूकता और निष्ठा से अपने दायित्व को निभा रहे हैं, अच्छी सेवा कर रहे हैं।' पूज्यप्रवर ने अपनी सेवा में नियुक्त मुनि ऋषभकुमारजी तथा गोचरी की सेवा करने वाली साध्वी विमलप्रज्ञाजी और साध्वी शुभ्रयशाजी के विनयभाव, जागरूकता व निष्ठा का भी उल्लेख किया।

vuxgi.k ik;f'pÙk

आज रात्रि में अर्हत वंदना से पूर्व शब्द (सभी संतों को सूचनार्थ की जाने वाली आवाज) हुआ। उसे सुनकर मुनिवृन्द धीरे-धीरे अर्हत वंदना करते हेतु आचार्यवर की सन्निधि में पहुंचने लगे। इस दौरान निर्धारित पांच मिनट से भी अधिक समय हो गया और संतों के आने का क्रम जारी था। यह देख आचार्यवर ने वात्सल्यपूर्ण वाणी में फरमाया--'यदि कोई संत शब्द होने के पांच मिनट बाद तक न आए तो उसे क्या प्रायश्चित्त दें?' सभी संतों को प्रत्युत्तर की अपेक्षा से अपनी ओर ही देखते हुए आचार्यवर ने मुस्कराते हुए फरमाया--'यदि कोई इस प्रकार पांच दिन विलम्ब कर दे तो उसे हमारे पास आहार करना होगा।' पूज्यवर द्वारा अनुग्रहपूर्ण प्रायश्चित्त की बात सुनकर अनेक संत एक साथ बोले--'गुरुदेव! अगर यह प्रायश्चित्त होगा तो कल से समय पर कोई आएगा ही नहीं।'

मुनिवृन्द की बात सुनकर आचार्यवर सहित सभी श्रोता मुस्कराने लगे। यह घटना-प्रसंग संतों के लिए

न केवल समयबद्धता की प्रेरणा लिए हुए था, अपितु इस प्रसंग में पूज्यवर की अनुकंपा, मृदुता और वत्सलता से ओतप्रोत शासना के भी साक्षात् दर्शन हो रहे थे।

vkxkeh nh{kk lekjksg

पूज्यप्रवर द्वारा सिवांची-मालाणी के अनेक क्षेत्रों में दीक्षा समारोह की घोषणाएं की गई हैं। विभिन्न क्षेत्रों में अब तक जिन दीक्षार्थियों की दीक्षाएं घोषित हुई हैं, वे इस प्रकार हैं--

nh{kkFkhZ	fnukad	{ks=k
१. मुमुक्षु हेमलता जीरावला (समदड़ी)	३१ मई २०१२	समदड़ी
२. मुमुक्षु परिमल बागरेचा (पारलू)	२ जून २०१२	पारलू
३. मुमुक्षु अशोक बोथरा (चेन्नई)	२१ जून २०१२	पचपदरा
४. मुमुक्षु जय मेहता (वाव)	२१ जून २०१२	पचपदरा
५. मुमुक्षु विवेक बोथरा (बरपेटा)	२१ जून २०१२	पचपदरा
६. मुमुक्षु वीणा बाफना (कनाना)	२१ जून २०१२	पचपदरा
७. मुमुक्षु हर्षिता बोथरा (बरपेटा)	२१ जून २०१२	पचपदरा
८. मुमुक्षु शीतल बोहरा (चेन्नई)	५ नवम्बर २०१२	जसोल
९. मुमुक्षु भावना भंसाली (जसोल)	५ नवम्बर २०१२	जसोल

lkèk ifrØe.k dk vkn'k

१. मुमुक्षु प्रतीक जैन (भीलवाड़ा) २. मुमुक्षु धीरज जैन (तोशाम)

सिवाना में प्रतिक्रमण कंठीकरण का आदेश प्राप्त बहिनों के नाम पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुके हैं।

vkpk; egkJe.k ver egkRlo ij vkxekèkkfjr ifr;kfxrk dk vk;ktu

^ ebA आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के संदर्भ में साहित्य समिति द्वारा अमृत समवसरण में दसवीं प्रतियोगिता के रूप में उत्तराध्ययन के पहले, दूसरे, दसवें, पन्द्रहवें तथा बत्तीसवें अध्ययन पर आधारित क्विज प्रतियोगिता रखी गई। पांच राउण्ड में चली इस प्रतियोगिता में सोलह व्यक्तियों ने भाग लिया--

१. ज्ञान ग्रुप- साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी लक्ष्यप्रभाजी, साध्वी मीमांसाप्रभाजी, समणी प्रसन्नप्रज्ञाजी

२. दर्शन ग्रुप- साध्वी सविताश्रीजी, साध्वी कार्तिकयशाजी, साध्वी मनोज्ञयशाजी

३. चारित्र ग्रुप- साध्वी रतिप्रभाजी, साध्वी सुमंगलप्रभाजी, समणी कंचनप्रज्ञाजी

४. तप ग्रुप- मुनि कोमलकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी, मुनि शुभंकरकुमारजी

५. वीर्य ग्रुप- मुनि अनंतकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी

प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका मुनि दिनेशकुमारजी एवं साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी ने निभाई। प्रतियोगिता में ज्ञान ग्रुप ने प्रथम, दर्शन ग्रुप ने द्वितीय, वीर्य ग्रुप ने तृतीय, चारित्र ग्रुप ने चतुर्थ व तप ग्रुप ने पंचम स्थान प्राप्त किया। पूज्यवर ने वरीयता के क्रम से पांचों वर्गों के प्रत्येक सदस्य को ३१, २१, ११, ९ व ७ कल्याणक पुरस्कारस्वरूप प्रदान किए तथा बालमुनि मृदुकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी एवं मुनि शुभंकरजी को बोनस के रूप में पांच-पांच कल्याणक प्रदान किए। पहली बार निर्णायक बनी साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी को तेरह व समय नियोजक के रूप में नियुक्त मुनि गौतमकुमारजी को पांच कल्याणक प्राप्त हुए। दसों प्रतियोगिताओं की सुन्दर आयोजना के संदर्भ में साहित्य समिति के पांचों सदस्यों को इक्यावन-इक्यावन कल्याणक बक्शीश में मिले। प्रतियोगिता का संयोजन मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने किया। प्रतियोगियों की ओर

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

से साध्वी मीमांसाप्रभाजी ने आभार व्यक्त किया। साध्वी जिनप्रभाजी ने परिणाम घोषित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रतियोगिता को उपयोगी बताते हुए कहा--'आगम कंठस्थ करना और उसका स्वाध्याय करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। सभी प्रतियोगियों ने श्रम किया है, ऐसा लगता है। बाल मुनियों एवं छोटी साध्वियों ने भी श्रम किया है। साहित्य समिति ने प्रतियोगिता का आयोजन कर अच्छा काम किया है।'

vk°oku jDrnku f'kfoj l tMu dk

आगामी १७ सितम्बर २०१२ को अ.भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा देश भर में विराट रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने संपूर्ण तेरापंथ समाज से इस समाजोपयोगी उपक्रम में सहयोगी बनने का अनुरोध करते हुए बताया कि क्रिकेट जगत के महान व्यक्तित्व सचिन तेंदुलकर ने भी इस विशाल शिविर से जुड़ने का आह्वान किया है। इस विषय में अधिक जानकारी के लिए अभातेयुप के संगठन मंत्री और शिविर के संयोजक श्री राजेश सुराणा से मोबाइल नं. ०९३७६५१३००० पर संपर्क किया जा सकता है।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/-श्रीमती अणसीदेवी-देवराज ढेलड़िया के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ व श्रीमती अणसीदेवी देवराज ढेलड़िया के ७वें एवं श्री देवराजजी ढेलड़िया के पांचवें वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू प्रकाश-संगीता, कमलेश-कविता, सुपौत्र जयेश, साहिल, मिथिलेश व सुपौत्री झील ढेलड़िया एवं ढेलड़िया परिवार, जसोल-गांधीधाम द्वारा प्रदत्त।

३१००/-स्व.श्रीमती सत्यभामा सरावगी (धर्मपत्नी-श्री सी.एल.सरावगी, झांसी) की पुण्यस्मृति में उनके परिवारजनों द्वारा प्रदत्त।

२१००/-सौ.स्मिता (सुपुत्री-श्री राजकरणजी पींचा, सरदारशहर) सह डा.प्रसन्न बांठिया (सुपुत्र-श्री अशोकजी बांठिया, गंगाशहर) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में उनकी दादीजी श्रीमती मोहनदेवी पींचा (धर्मपत्नी-स्व.सुखलालजी पींचा) द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व.श्रीमती कौड़ीदेवी दूगड़ (धर्मपत्नी-स्व.किस्तूरचन्दजी दूगड़, श्रीडूंगरगढ़) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू जुगराज-कमलादेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू सुरेन्द्र-सुमन, अजित-स्नेहा, रणजीत-रूबी दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. नारायणचन्दजी राखेचा (लूणकरणसर-इन्दोर) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीनादेवी राखेचा एवं राखेचा परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व.मांगीलालजी लूणिया (रामगढ़-दिल्ली) की पुण्यस्मृति में श्रीयुक्त श्रीचन्दजी लूणिया द्वारा प्रदत्त।

i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&

d'koi lkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&tu 'orkEcj rjkiFkh lHkk

ik- ckykrjk&…†† ,„„] ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ,‹^Š,‡‡…Šƒ] ,‹…‡„†,†^†ƒ

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % ƒ„&‡&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koi lkn pronhA**